कृष्णा सोबती के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन का स्वछन्द प्रेम

Pratibha Tiwari

Ranchi University, Ramchi

समाज में परिव्याप्त स्त्रियों के दुःख-दर्द के साथ ही साथ उनके सशक्त व्यक्तित्व को व्यापक रूप से मानवीय धरातल पर अभिव्यक्ति देने वाली ज्ञानपीठ पुरस्कृत लेखिका कृष्णा सोबती का साहित्य प्रतिरोध, 'आत्म सम्मान और स्वाधिकार के चेतना का साहित्य है। वैसे तो लेखिका स्वयं को लेखिका मानती ही नहीं। वे कहती हैं "जब मैं लिखती हूँ तो याद नहीं रखती कि मैं महिला हूँ या पुरुष। लेखक प्रथमतः लेखक होता है स्त्री या पुरुष नहीं।"(समकालीन साहित्य समाचार पत्रिका-अंक जून 1995, पृष्ठ संख्या 35)

लेखन को जीवन का पर्याय मानने वाली कृष्णा सोबती का एक एक उपन्यास जीवन के संघर्ष और समाज कि परिस्थितियों का जीवंत दस्तावेज है। यदि पाठक तत्कालीन समाज कि परिस्थितियों से परिचित होना चाहता है तो उसे कृष्णा सोबती के उपन्यासों का अध्ययन करना चाहिए। वे समाज के प्रति पूर्णतः सचेत एवं सजग हैं जो उनकी रचनाओं में दृष्टिगोचर होता हैं और यही उनकी रचनाओं को साहित्य जगत में विशिष्ट स्थान प्रदान करता है। कृष्णा सोबती एक ऐसी लेखिका हैं जिन्होंने स्त्री के हर रूप को बड़ी ही तल्ख़ और बेबाकी से प्रस्तुत किया है।

कृष्णा जी की व्यापक मानवीय दृष्टि कि खूबी यह है कि वे सामाजिक दृष्टि से बुरा या वर्जित समझे जाने वाले किसी कर्म मे परिस्थितिवश घिरे इंसान से घृणा नहीं करती बल्कि जो उसे उस परिस्थिति से उबरने के लिए संघर्ष करता है, उसका हौसला बढाती हैं और अपनी सर्जना मे ऐसे संघर्षशील चरित्रों को बल प्रदान करती हैं। जिस पर कलम चलाने से सनातनी लेखक संकोच करते हैं।

कृष्णा सोबती ने अपने उपन्यासों मे जहाँ एक ओर आधुनिक स्त्री की समस्याओं का सूक्ष्म चित्रण किया हैं वही दूसरी ओर उसके स्वछन्द प्रेम को भी बेबाकी से उकेरा है।कृष्णा सोबती के एक लघु उपन्यास (मित्रो मरजानी , 1967) शहरी निम्न मध्यमवर्ग के कामकाजी परिवार की एक ऐसी कथा है,जिसमे एक भिन्न वातावरण (रमणी की हवेली)मे जन्मी वाली उन्मुक्त मिजाज वाली युवती मित्रो के बहु रूप मे आ जाने से पारिवारिक वातावरण और घरेलु रिश्तो मे जो नई स्थितियाँ और टकराव पैदा होते हैं और घर के बड़े किस तरह संतुलन बनाये रखने की कोशिश करते हैं, यह इसी जद्दोजहद की कहानी है। दिलचस्प बात यह है कि यहाँ खुद मित्रो भी अपने खुले

मिजाज के बावजूद उसी बदले हुए वातावरण मे ढलने का प्रयास करती है , जिन बातो का उसे अभ्यास नहीं है, उन्हें अंगीकार करने का प्रयत्न करती है, परिवार और रिश्तों कि मर्यादा समझने लगती है और इस तरह हिंदी का पाठक पहली बार एक ऐसे स्त्री चरित्र से रूबरू होता है , जो सामाजिक दायरे मे वर्जित समझे जाने वाली दैहिक आकांक्षाओं और बुनियादी मानवीय भाव वृत्तियों को बहुत सहज ढंग से अभिव्यक्त करती है।यह उपन्यास ऐसे ही घर मे रहने - जीने वाले चरित्रों की मार्मिक कहानी के रूप मे आगे बढ़ता है। इस घर के सदस्य हैं - मुखिया गुरुदास,उनकी पत्नी धनवंती ,बड़ा बेटा बनवारीलाल, मंझला सरदारीलाल और एक छोटा गुलजारी। तीनो शादीशुदा हैं जिनकी पत्नियां हैं - सुहागवंती (सुहाग), सुमित्रावंती (मित्रो), फूलवन्ती (फूलो)।सरदारीलाल और मित्रो के आपसी सम्बन्ध अच्छे नहीं है, दोनों के बीच अक्सर लड़ाइयां होती हैं और सरदारी लाल मित्रो पर हाथ भी उठा देता है।मित्रो का स्वभाव घर मे सबसे अलग है उसकी घर मे किसी के साथ नहीं नहीं बनती और वह सभी लोगो पर अपने तीखे व्यंग्यात्मक बाणों की वर्षा करती है।

कहानी का मुख्य केंद्र मित्रो कि मानसिकता के इर्द - गिर्द ही घूमता है , मित्रो के स्वभाव को कोई समझ नहीं पता है कभी वह झगड़ा करती है, कभी मसखरी करती है तो कभी परिवार के लिए अपने गहने त्याग कर देती है। कहानी के किरदारों ने सभी मानवीय भावनाओ जैसे क्रोध ,प्रेम , त्याग ,ईर्ष्या,लालच,डर, ख़ुशी का अच्छे से वर्णन किया है। पति - पत्नी के बीच की आपसी तकरार के बाद रात मे धीमे स्वभाव वाली जिठानी सुहाग देवरानी मित्रो को समझाने का प्रयास करती है तो वह कह उठती है - "जिठानी तुम्हारे देवर सा बकलोल कोई और दूजा न होगा न न दुःख - सुख, न प्रीत - प्यार, न जलन- न प्यास-- बस आये दिन धौला धप्पा --- लानत मलामत" (पृष्ठ संख्या-23)

मित्रो जितनी पारिवारिक, सामाजिक व् ममत्व मे भरी है कामवासना के आवेग भी उसमे उतना ही है। जब जिठानी सुहाग मित्रो से पूछती है कि "तू इस राह - कुराह मे कैसे पड़ी?" तो वह कहती है। -"सात नदियों कि तारु , तवे सी काली मेरी माँ ,और मैं गोरी चिट्टी उसकी कोख पड़ी। कहती है, इलाके बड़भागी तहसीलदार कि मुँहदारा है। मित्रो अब तुम ही बताओ जिठानी तुम जैसा सत-बल कहाँ से पाँऊ-लाऊ ? देवर तुम्हारा मेरा रोग नहीं पहचानना बहुत हुआ हफ्ते - पखवारे---- और मेरे इस देह मे इतनी प्यास है, इतनी प्यास है कि मछली सी तड़पती हूँ।"इस प्रकार हम देखते हैं कि मित्रो का चरित्र अत्यंत बोल्ड और विद्रोही है। वह अपनी यौन इच्छाओ और स्वतंत्रता कि खुलकर अभिव्यक्ति करती है जो उस समय के समाज के लिए एक बड़ा धक्का था।

सूरजमुखी अँधेरे मे (1972) यह उपन्यास तीन भागो/सर्गो मे विभाजित है- पल , सुरंगे और आकाश तीनो सर्ग रत्ती के जीवन मे आयी घटनाओ को कभी फ़्लैश बैक तो कभी वर्तमान मे दिखाते हैं। "पूल " सर्ग मे रत्ती के जीवन मे अकेलापन और कुंठा दिखती है। वह अपने दोस्तों रीना और केरी के भरे पूरे परिवार मे अकेला और अधूरा महसूस करती है। "सुरंगे " सर्ग के जिस कारण उसकी यह मनोदशा हुई , वह रहस्य उजागर होता है, इसी सर्ग मे हम यह देखते हैं कि पड़ाव कि तरह पुरुष उसके जीवन मे आते जाते हैं पर "आकाश "सर्ग मे रत्ती दिवाकर के सानिध्य मे खुद को पूर्ण और श्राप से मुक्त पाती है। इस उपन्यास मे हम यह देखते है कि सेक्स/ काम राग जो शरीर की बाकि इन्द्रियों कि तरह ही सामान्य क्रिया है परिस्थिति विशेष मे जिसकी खुराख अनिवार्य रूप से जरुरी हो जाती है , रत्ती उससे जबरन भागने लगती है। शरीर कि स्वाभाविक आवश्यकता

को दबाने लगती है। वह स्त्री - पुरुष के इस प्राकृतिक संयोग से भय खाने लगती है , इस आदिम सम्बन्ध को झुठलाने लगती है वह सोचती है कि शर्तों मे किसी के पास न सोकर जीना ही अच्छा है पर मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण कहता है कि सेक्स कि भावना को एक हद के बाद दबाना कई मामलो मे घातक सिद्ध होता है। जिसका सम्बन्ध न सिर्फ भावनात्मक आवेगों के उच्छलन से है बल्कि हार्मोनल चेंज भी व्यवहार को निर्धारित करते है। समाज इसे कुछ भी कहे पर इसके पीछे नितांत जैविक कारण है नैतिकता।आदर्श के जामें से इसे व्यवस्थित और मानकीकृत रूप दे सकते हैं पर दबा नहीं सकते,समाप्त नहीं कर सकते हैं।रत्ती अपने स्त्री निहित अंगों को छूती है और हर वक्त अपने अधूरेपन को महसूस करती है। लोगों की बात खुद उसके अपने शब्द बन कर उसके कानो के घुलते हैं। वह मन में बार -बार दोहराती है कि "रत्ती अच्छी लड़की नहीं ,रत्ती कोई औरत नहीं,वह सिर्फ गीली लकड़ी है जब भी जलेगी ,धुंआ देगी सिर्फ धुंआ। (पृष्ठ संख्या -20)

कृष्णा सोबती के उपन्यास "यारों के यार " "तिन पहाड़ " 1988 में कृष्णा सोबती ने जया के माध्यम से प्रेम के बदलते मूल्यों को व्यक्त किया है। उपन्यास में श्रीधर पहले तो जया पर अधिपत्य जमाते हुए उसे मंगेतर बना लेता है, परन्तु दूसरी ओर डायना के साथ विवाह करके जया का तिरस्कार करता है। स्त्री आज भी पुरुष के अधीन है वह रोटी कपड़ा और मकान के एहसान तले पुरुष के नीचे दबी हुई। अहसान की इन्हीं दीवारों में कैद होकर जया श्री दा की प्रतिक्षा में रत स्वर्णिम क्षणों की कल्पनाओं में डूबी रहती है परंतु डायना के साथ श्री दा का विवाह जया की कल्पनाओं को बेरंग और बेहाल कर देता है।अपनी क्षणभंगुर प्रेम की कोपलों को अस्त होते देखकर जया जब श्री दा के परिवार का परित्याग कर तपन का वरण करती है तो वहां भी पहले से तपन के साथ पुतुल के संबंधों को जान उनके मध्य दरार बनने की भिज्ञाता अर्थात निरर्थक , उद्देश्यहीन भविष्य जीने का कटु बोध जया श को खोखला कर देता है और अंत में वह जल समाधि ले लेती है।

इस किताब के माध्यम से पाठक पहले तपन से मिलता फिर तपन की स्मृतियों में मौजूद जया से उसकी मुलाकात होती है। तिन पहाड़ के केंद्र में प्रेम है ,आकर्षण है,विरह है और अवसाद है।हमे अक्सर बताया जाता है कि प्रेम एक ही व्यक्ति से होता है लेकिन क्या असल में सच है। कई बार प्रेम अपने आप फूटता है और उस पर आपका कोई वश नहीं रहता है।"कुछ हो जाता है जिसके आगे वचन नहीं रहते ,आग्रह नहीं रहते - कुछ नहीं रहता। बस एक राग - एक प्यास।" (पृष्ठ संख्या 73) कहने को तो ऊपर दिया कथन किताब का एक किरदार श्री अपने विषय में कहता है लेकिन यह कहानी के तीनों मुख्य किरदारों जाया,तपन और श्री पर फिट बैठता है। जहां श्री को एडिना से प्रेम होता है वहीं तपन को पुतुल रहते हुए जाया पसंद आती है और जाया के मन में कहीं न कहीं तपन के लिए आकर्षण पैदा हो जाता है। इस तरह से देखा जाए तो तपन और श्री क्या उतने जुदा हैं। एडिना और जया क्या उतने जुदा हैं। शायद नहीं। इस प्रकार हम देखते हैं कि तिन पहाड़ में स्त्री के प्रेम की स्वतंत्र अभिव्यक्ति हुई है।

जिंदगीनामा उपन्यास वैसे तो चरित्रों की दृष्टि से भरा हुआ है व स्त्री के पारंपरिक रूप का वर्णन अधिक है परंतु छोटी शाहनी (बिंद्रदायी) छोटे शाह काशिशाह की पत्नी व दो बेटों की मां है। वह अभी युवा है व यौवन का भोग करना चाहती है,किंतु उसका पति काशी शाह शारीरिक सुखों व दुनियावी सुखों से विमुख हो चुका है। बिंद्रादयी

अपनी जेठानी शाहनी से कभी कभार मन की बस खोल लेती है, क्योंकि दोनो का संबंध बहनापे का अधिक है, देवरानी - जेठानी का कम,शहानी को भी यहां धक्का लगता है कि उसकादेवर अभी से इतना आध्यात्मिक होने लगा है कि यौवन सुखों से मुंह मोड़ लिया है। बिंद्रायनी अपने भतीजे लाली से खूब प्यार करती है और घर के प्रति पूरी जिम्मेदारी निभाती है।

सहायक पुस्तकें/ग्रन्थ

[1] मित्रो मरजानी (पृष्ठ संख्या - 23)
[2] सूरजमुखी अंधेरे में (पृष्ठ संख्या - 20)
[3] तिन पहाड़ (पृष्ठ संख्या - 73)
[4] जिंदगी नामा
[5] हिंदी उपन्यास का इतिहास-गोपाल राय
[6] हिंदी गद्य का इतिहास- डॉ० नागेंद्र